विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

घास-भूमि पर आक्रामक प्रजातियों से उत्पन्न संकट व समाधान

अरावली पर्वतमाला उत्तर-पश्चिम भारत की प्रमुख पारिस्थितिक इकाई है। यह दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात तक लगभग 670 किलोमीटर में फैली हुई है। यह क्षेत्र मुख्यत: शुष्क से अर्द्ध-शुष्क जलवायु वाला है, जिसमें वार्षिक वर्षा औसतन 500-700 मिमी के बीच होती है। अरावली की घास-भूमियाँ पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी एवं जल संरक्षण तथा ग्रामीण समुदायों की आजीविका के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये घास-भूमियाँ थार रेगिस्तान के विस्तार को रोक कर उत्तर भारत, विशेष रूप से दिल्ली-एनसीआर को मरुस्थलीकरण के खतरे से सुरक्षित रखती हैं। घास भूमियाँ पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का एक समृद्ध स्त्रोत हैं, जो जैव विविधता संरक्षण, जलसंरक्षण, जलवायु नियमन और मृदा उर्वरता जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य निभाती हैं। ये क्षेत्र अनेक वन्यजीवों, विशेषकर चरने वाले स्तनधारियों और परागणकर्ताओं का आवास हैं, जिससे खाद्य शृंखला और परागण-आधारित कृषि प्रणाली सुदृढ़ होती है। घास भूमियाँ वर्षा जल के संचयन और भूजल पुनर्भरण में सहायक होती हैं तथा भूमि कटाव को रोक कर मृदा की उत्पादकता बनाए रखती हैं। साथ ही, ये कार्बन को जैविक रूप में मृदा में संचित करके जलवायु परिवर्तन के शमन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन सेवाओं का आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिक महत्व अत्यंत व्यापक है।

तेजी से बढ़ते शहरीकरण, अनियंत्रित खनन, अत्यधिक चराई, अतिक्रमण और विदेशी आक्रामक पौधों के कारण अरावली की घासभूमियाँ का बहुत ह्रास हुआ है। राजस्थान में पत्थर के खनन से कई पहाड़ियाँ विलुप्त हो गई हैं, वहीं दिल्ली और हरियाणा के क्षेत्रों में शहरी विकास और अतिक्रमण से पहाड़ियों का अस्तित्व खतरे में है। इसके अतिरिक्त, विलायती कीकर या प्रोसोपिसजूलीफ्लोरा, लैंटाना, और पार्थेनियम या गाजरघास जैसी आक्रामक प्रजातियों ने घास के बीड़ों की स्थानीय वनस्पति को गंभीर नुकसान पहुँचाया है।

विदेशी प्रजाति प्रोसोपिसजूलीफ्लोरा के आक्रमण से देश के विभिन्न क्षेत्रों में इन घासभूमियों की स्थिति चिंताजनक हो गई है। यह पौधा मूलत: मध्य और दक्षिण अमेरिका का है, जिसे भारत में ब्रिटिश काल के दौरान मरुस्थलीकरण नियंत्रण और ईंधन की समस्या के समाधान हेतु लगाया गया था। बाद में यह प्रजाति तीव्रता से फैलती गई, और स्थानीय पारिस्थितिक तंत्रों के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया है। उदाहरण के लिए तमिलनाडु राज्य के पॉइंट कैलीमर वन्यजीव अभयारण्य, गिंडी राष्ट्रीय उद्यान और सत्यमंगलम बाघ अभयारण्य में हुए अध्ययनों के अनुसार, प्रोसोपिस के विस्तार के कारण यहाँ पाए जाने वाले कृष्णमृग जैसे स्थानीय जीवों की आबादी और वितरण गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं। घासभूमि की उपलब्धता, घास का उत्पादन और खुले पर्यावास क्षेत्र में कमी आने से कृष्णमृग का घनत्व घट गया है। प्रोसोपिस के बढ़ते आवरण के कारण घास के मैदानों में होने वाली जैविक गतिविधियाँ कम हुई हैं।

गुजरात राज्य के बन्नीघास भूमिक भी एशिया के सबसे विशाल प्राकृतिक चरागाह थे, परन्तु अब प्रोसोपिसजूलीफ्लोरा के प्रसार ने स्थानीय पारिस्थितिकी को बुरी तरह प्रभावित किया है। यहाँ की मूल घास प्रजातियाँ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। इस बदलाव का प्रभाव स्थानीय अर्थव्यवस्था और समाज पर भी पड़ा है। ग्रेट रण ऑफ कच्छ क्षेत्र और जंगली गधा वन्यजीव अभयारण्य में भी यही समस्या देखी गई है, जहाँ बीते दशकों में घासभूमि का लगभग 45 प्रतिशत क्षेत्र प्रोसोपिस से ढक गया है। प्रोसोपिस की वार्षिक प्रसार दर यहाँ 2 प्रतिशत से 7 प्रतिशत तक पाई गई है।

राजस्थान के थार मरुस्थल में भी प्रोसोपिसजूलीफ्लोरा ने सामुदायिक चरागाहों पर आक्रमण किया है, जिससे स्थानीय वनस्पतियों की प्रजातियों में भारी गिरावट आई है। इस क्षेत्र में प्रोसोपिस के नियंत्रण के लिए लकड़ी से चारकोल बनाने, फलियों से आटा बनाने जैसे उपायों का उपयोग आर्थिक लाभ के साथ किया जानेके प्रयास हुए है, किन्तु स्थानीय समुदाय केवल ईंधन के लकड़ी के लिए शाखाएं काट कर ले जाते हैं और ठूंठ में पुन: प्रस्फुटन होते रहने के कारण प्रसार को नियंत्रित नहीं किया जा सका। छोटे स्तनधारियों जैसे कृन्तकों पर भी प्रोसोपिसजूलीफ्लोरा के प्रभाव का अध्ययन पश्चिम भारत के घासभूमि पारिस्थितिकी में किया गया है। शोध में स्पष्ट हुआ कि प्रोसोपिस के घने आवरण वाले क्षेत्रों और पूर्णत: खुले घासभूमि क्षेत्रों में कृन्तकों की आबादी अधिक रही, जबकि आंशिक रूप से फैले प्रोसोपिस क्षेत्रों में उनकी संख्या कम थी। इससे यह संकेत मिलता है कि प्रोसोपिस के प्रभाव स्थान विशेष और प्रजाति विशेष पर निर्भर हैं।

यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर पक्षी अभयारण्य)भी प्रोसोपिस के आक्रमण से अत्यंत प्रभावित हुआ है। शोध में पाया गया है कि पिछले पाँच दशकों (1972-2024) के दौरान में यहाँ प्रोसोपिस का फैलाव लगभग 82 प्रतिशत बढ़ा है, जबकि स्थानीय घासभूमियाँ 51 प्रतिशत घट गई हैं। इस अवधि में प्रोसोपिस का वार्षिक प्रसार दर 3 प्रतिशत से अधिक आँकी गई है। हालाँकि वर्ष 2021 के बाद से प्रबंधन प्रयासों से इसके फैलाव में थोड़ी कमी आई है, लेकिन समस्या अभी भी बनी हुई है और निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

भारत के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में घासभूमियाँ एवं वन पारिस्थितिक तंत्र लैंटाना है के कारण भी संकटग्रस्त हैं। लैंटाना मूल रूप से दक्षिण अमेरिका से आया एक सजावटी पौधा है, जो अब भारत के लगभग सभी उष्ण एवं उपोष्ण क्षेत्रों में तेजी से फैल चुका है। लैंटाना की झाड़ी न केवल स्थानीय जैवविविधता को नष्ट करती है, बल्कि वन्य जीवों के लिए प्राकृतिक आवासों को भी हानि पहुँचाती है, जिससे मानव-वन्यजीव संघर्ष भी बढ़ रहा है। आंध्र प्रदेश की नल्लमल्लाय पर्वत श्रृंखला भी आक्रामक प्रजातियों से प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। यहाँ शोधार्थियों ने सात अत्यंत हानिकारक प्रजातियाँ चिन्हित की हैं जिनमें लैंटाना, गाजर घास या पार्थिनियम हिस्टेरोफोरस, चटक चाँदनी (हिप्तिससुआवेओलेंस, लाजवंती, क्लीओमविस्कोसा और विलायती बबूल शामिल हैं। ये स्थानीय वनस्पतियों के लिए अस्तित्व का खतरा बन चुकी हैं।

बीज एवं रोपण सामग्री की सुनिश्चितता हेतु राज्य वनविभाग की नर्सरियाँ, भारतीय घासभूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान (झाँसी), केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (जोधपुर), कृषि विश्वविद्यालयो एवं समुदाय आधारित बीज भंडारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। स्थानीय समुदायों को प्रशिक्षित कर बीज संग्रहण, बीज प्रसंस्करण एवं नर्सरी संचालन की क्षमता विकसित की जा सकती है, जिससे दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता संभव हो सके।

लैंटाना नियंत्रण के लिए एक प्रभावी रणनीति विकसित की गई है, जो कॉर्बेट बाघ अभयारण्य, कलेसर राष्ट्रीय उद्यान, हरियाणा,सतपुड़ा बाघ अभयारण्य, मध्य प्रदेश, और राजस्थान के रणथम्भोर और सरिस्का बाघ अभयारण्यों में सफलतापूर्वक लागू की गई है। इस पद्धति में पहले लैंटाना को जड़ सहित उखाड़कर हटाया जाता है। जड़ों वाला हिस्सा ऊपर की ओर रखते हुए ढेर लगाया जाता है जो बाद में सड़कर मिट्टी में कार्बन की मात्रा बढ़ाता है। बाद में अंकुरित होने वाली लैंटाना के नए पौधों को नियमित रूप से हटाया जाता है। खाली हुई भूमि का पारिस्थितिकी पुनर्स्थापन स्थानीय घास प्रजातियों और फोर्ब्स के माध्यम से किया जाता है।

हाल ही में भारत सरकार ने "अरावली ग्रीन वॉल" परियोजना प्रारंभ की है, जिसका उद्देश्य गुजरात से दिल्ली तक लगभग 1400 किलोमीटर लंबी और 5 किलोमीटर चौड़ी हरित पट्टी विकसित करना है। इस परियोजना में स्थानीय प्रजातियों का रोपण, जल संरक्षण, सामुदायिक भागीदारी और जैव विविधता संरक्षण मुख्य घटक हैं।पुनर्स्थापन के लिए स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप स्वदेशी प्रजातियों का चयन आवश्यक है। चयनित प्रजातियाँ सूखा-सहनशील, तेजी से बढ़ने वाली, और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होनी चाहिए। प्रमुख घास प्रजातियों में अंजन घास, पवना घास, धोलू घास, धामन घास शामिल हैं। ये प्रजातियाँ सूखा-सहिष्णु हैं, अच्छी चारा गुणवत्ता प्रदान करती हैं, और मिट्टी को स्थिर रखने में सहायक होती हैं।घासों के साथ-साथ स्थानीय शाकीय प्रजातियाँ जैसे इन्डिगोफेरा, सरफोंका, शंखपुष्पी आदि भी पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण हैं। ये शाकीय पौधे भूमि का आवरण बनाते हैं, मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाते हैं, और परागणकर्ताओं के लिए आवास प्रदान करते हैं।

इन घासभूमियों का पुनर्स्थापन न केवल पर्यावरणीय संतुलन के लिए आवश्यक है, अपितु यह ग्रामीण आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

इस पुनर्स्थापन प्रक्रिया का प्रथम चरण आक्रामक बाह्यवन स्पतिप्रजातियों का प्रभावी नियंत्रण है। विलायती कीकर जैसी प्रजातियाँ भूमिगत जल, पोषक तत्त्वों एवं सूर्यप्रकाश का अत्यधिक दोहन कर देशज वनस्पतियों के विकास को अवरुद्ध करता हैं। इनका समूल उन्मूलन आवश्यक होता है। इसी प्रकार, लैंटाना तथा गाजर घास जैसी झाड़ियों का नियंत्रण निराई, छँटाई और दीर्घकालिक सतत निगरानी के माध्यम से किया जा सकता है। द्वितीय चरण में स्थल का समग्र मूल्यांकन किया जाता है, जिसमें मृदा की बनावट, जलस्त्रोतों की उपलब्धता, स्थल की ढाल, तथा शेष बची देशज वनस्पतियों की स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है। इसके पश्चात, जल-संरक्षण एवं मृदा-उन्नयन हेतु समोच्च रेखीय खाइयों, अवरोध बाँधों, पत्थर बाँधों तथा गोबर या हरी खाद जैसे जैविक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है। तृतीय चरण में वर्षाऋतु के प्रारम्भ में स्थानीय देशज घासों -जैसे सेनक्रस, डाईकैन्थियम, हेटेरोपोगोन आदि तथा शाकीय वनस्पतियों जैसे स्टाइलोसेन्थेस, अलिसीकार्पस, नील आदि के बीजों का छिड़काव किया जाता है। पथरीले एवं दुर्गम क्षेत्रों में बीज-पिंड (सीड बॉल) जैसी नवाचार-आधारित विधियों का भी उपयोग किया जा सकता है।

बीजों के प्रसारण के उपरान्त प्रथम दो वर्षों तक इस नवस्थापित घास भूमि को चराई से पूर्णत: सुरक्षित रखना अनिवार्य होता है। इसके लिए अस्थायी बाड़, समुदाय-नियंत्रित चराई व्यवस्था, तथा पशुपालकों की सहभागिता से निगरानी की व्यवस्था की जाती है। पुनर्स्थापन की प्रगति की निरंतर निगरानी हेतु वार्षिक वनस्पति मूल्यांकन, चित्रविश्लेषण, तथा ग्राम आधारित विवरण प्रणाली को संस्थागत रूप देना चाहिए। जब घास एवं शाकीय वनस्पति स्थिर हो जाए, तब चरणबद्ध चराई एवं घास की कटाई की अनुमति दी जा सकती है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बना रहे और समुदाय को सतत लाभ प्राप्त हो।

बीज एवं रोपण सामग्री की सुनिश्चितता हेतु राज्य वनविभाग की नर्सरियाँ, भारतीय घासभूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान (झाँसी), केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (जोधपुर), कृषि विश्वविद्यालयों एवं समुदाय आधारित बीज भंडारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। स्थानीय समुदायों को प्रशिक्षित कर बीज संग्रहण, बीज प्रसंस्करण एवं नर्सरी संचालन की क्षमता विकसित की जा सकती है, जिससे दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता संभव हो सके।

नीतिगत दृष्टि से घासभूमि पुनर्स्थापन हेतु अंतराज्यीय समन्वय, स्पष्ट भू-अधिकार, स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता, एवं ग्रामीण आजीविका के सृजन हेतु योजनाबद्ध प्रयत्न अपेक्षित हैं। विशेष रूप से जलवायु संरक्षण से जुड़ी सेवाओं का आर्थिक मूल्य निर्धारण कर उसका प्रत्यक्ष लाभ समुदायों को प्रदान करना इस प्रक्रिया को स्थायित्व प्रदान करेगा। जन-जागरूकता अभियानों के माध्यम से लोगों को घासभूमि के पर्यावरणीय एवं आर्थिक महत्व से परिचित कराना भी अत्यन्त आवश्यक है।

अन्ततः, अरावली सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में घासभूमि पुनर्स्थापन एक दीर्घकालिक, बहु-स्तरीय एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की प्रक्रिया है, जिसमें वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रशासनिक संकल्प और जन-सहभागिता का समन्वित प्रयास आवश्यक है। यह प्रक्रिया न केवल पर्यावरणीय संतुलन और जलवायु अनुकूलन का माध्यम बनेगी, अपितु यह ग्राम्यजीवन, जल-स्त्रोतों, और जैवविविधता के लिए एक नवजीवन प्रदान करेगी- जिससे भावीपीढ़ियों के लिए एक संतुलित, हरित एवं टिकाऊ भारत की कल्पना साकार हो सकेगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

यह ग्लेशियर की मौत की शोकसभा नहीं अपितु भावी संकट का है संकेत

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

अभी दो चार दिन पहले ही भारत, भूटान, नेपाल और चीन के चुनिंदा ग्लेशियलोजिस्टों ने समुद्र तल से करीब 5100 मीटर उंचे याला ग्लेशियर के मौत की अनोखी शोकसभा का आयोजन कर दुनिया के देषो को ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव के प्रति सावचेत करने का प्रयास किया है। हांलाकि किसी ग्लेशियर की मौत की विधिवत घोषणा और मातम सभा के आयोजन का यह कोई पहला मौका नहीं है। पिछले सात सालों में यह तीसरा मौका है जब ग्लेशियर की मौत की शोक सभा का आयोजन और उस स्थल पर पट्टिका लगाने का काम हुआ है। इससे पहले 2019 में आइसलैण्ड के ओक और 2021 में मैक्सिको के ओयोलोको ग्लेषियर के मौत की शोकसभा का आयोजन किया जा चुका है। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया को किस दिशा में ले जा रही है और किस तरह के प्रभाव हमें पिछले सालों से लगातार देखने को मिल रहे हैं उनमें से ग्लेशियरों के नष्ट होना तो केवल और केवल एक पक्ष मात्र है। जबकि ग्लोबल वार्मिंग के चलते ग्लेशियरों के पिघलने के बारे में विशेषज्ञ वैज्ञानिक लगातार सावचेत करते रहे हैं।

जब कोई ग्लेशियर इस हालात में आ जाता है कि उसका मूवमेंट ही लगभग समाप्त हो जाता है तो वह ग्लेशियर मृत श्रेणी में आ जाता है। दुनियाभर में ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज बढ़ती जा रहे हैं। ग्लेशियरों के पिघलने के कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। समुद्र के जल स्तर के बढ़ने के कारण समुद्र किनारे के कई शहरों के सामने डूबने का संकट दिखाई दे रहा है। यह तो केवल एक पहलू है। ग्लोबल वार्मिंग और ग्लेशियरों के पिघलने के कारण सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तापमान में अत्यधिकता जैसे साल दर साल गर्मी में तेजी और असमय तेज गर्मी, तेज वर्षात और तेज सर्दी प्रभावित कर रही है। जंगलों में आग के कारण जिस तरह से जंगल और जंगल की जीव विविधता प्रभावित हो रही है और जंगल रेगिस्तान में तब्दील हो रहे हैं यह अपने आपमें गंभीर है। इसी तरह से मौसम में अनावश्यक बदलावों के कारण नई नई बीमारियों के साथ ही विलुप्त बीमारियां जैसे मलेरिया और वायरस जनित बीमारियों का बढ़ता प्रकोप, दवाओं की असरता कम होना और ना जाने इस तरह के क्या क्या परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं यह आज सारी दुनिया के सामने हैं। ग्लोबल वार्मिंग के चलते सूखा और रेगिस्तान का विस्तार लगातार होता जा रहा है। पिछले सालों में दुनिया के देशों में चक्रवातों का चक्र तेजी से बदला है और तूफानों की तीव्रता और फ्रिक्वेंसी में तेजी आई है। इसके साथ ही भूकंपों की सक्रियता बढ़ रही है। अब तूफान और भूकंपों की फ्रिक्वेंसी तो इस कदर बढ़ गई है कि कब भूकंप आ जाये और कब समुद्र तट की और बढ़ते तूफान की घोषणा हो जाए यह आये दिन देखने को मिल रहा हे। दुनियाभर के देश ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से प्रभावित है। जिस तरह के बड़े-बड़े सम्मेलनों में दुनिया के नेता ग्लोबल वार्मिंग को लेकर चिंतन मनन को जुट तो जाते हैं पर परिणाम अभी तक जो सामने दिखाई दे रहे हैं पह गंभीर संकट की और साफ इशारा समझने की आवश्यकता है।

दरअसल जिस तरह का ग्लोबल वार्मिंग का असर देखा जा रहा है उससे यह माना जा रहा है कि लाख प्रयासों के बावजूद 9 लाख ट्रिलियन टन बर्फ के पिघलने की संभावना वैज्ञानिकों द्वारा बार बार की जा रही है। मौसम में हर दूसरे तीसरे दिन बदलाव और चरम मौसम के हालात गंभीर है। रेगिस्तान का विस्तार हो रहा है तो सूखे की संभावनाएं अधिक हो गई है। बीमारियों के नित नए वेरियंट सामने आ रहे हैं तो कीटाणुओं की सक्रियता और उनका असर साफ देखा जा सकता है। ऐसे में एक और दुनिया के देशों को ढुलमिल नीति त्यागकर ठोस प्रयास करने होंगे। गैरसरकारी संगठनों को भी आगे आना होगा। इसके साथ ही वैज्ञानिकों को भी एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि केवल आय बढ़ाने के लिए इस तरह के प्रयास नहीं करने चाहिए। गैरसरकारी संगठनों की ऐसें हालातों में और अधिक्र सक्रियता के साथ अभियान चलाने होंगे। ग्लेशियरों के पिघलने का संकट आने वाले समय में और अधिक गंभीर होगा क्योंकि जिस तरह से कांक्रिट के जंगल, अत्यधिक भू जल का दोहन पंखे कूलर के स्थान पर एयर कण्डीशरों का बढ़ता प्रयोग, और इलेक्ट्रोनिक उत्पादों के कारण हालत दिन प्रतिदिन खराब होते जा रहे हैं। हालात यही रहे तो ग्लेशियरों की बर्फ पिघलेगी ही पिघलेगी साथ ही अनेक समस्याएं और अधिक नकारात्मक प्रभाव डालेगी।

–डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

नानी बाई के मायरे की शुरूआत

बूंदी। श्रृंग महिला मंडल द्वारा आयोजित पांच दिवसीय श्री नानी बाई के मायरे की शुरूआत शनिवार सुबह भव्य कलश यात्रा से हो गई। कलश यात्रा तिलक चैक स्थित चारभूजा मंदिर से शुरू होकर सदर बाजार स्थित श्रृंग भवन पुहंची। कलश यात्रा में मुख्य जजमान लोकेश सुखवाल सिर पर धार्मिक पुस्तक लिये हुये चल रहे थे। इससे पूर्व मुख्य जजमान लोकेश सुखवाल व सह जजमान सुनील सखवाल ने विधिवत पूजा अर्चना सम्पन्न करवाई। शनिवार को संगीतमय कथा के दौरान कथा व्यास गोपाल कृष्ण जी महाराज ने श्रृदालुओ व श्रोताओ को बताया कि नरसी जी पूर्व जन्म से गूंगे और बहरे थे। संत महात्माओ की कृपा से नरसी जी महाराज को वाणी और कान दोनों ही प्राप्त हुए हैं और शंकर भगवान की बड़ी स्तुति करने से भोलेनाथ की कृपा प्राप्त हुई और भोलेनाथ ने नरसी जी को गौ लोक में दिव्या रस के दर्शन करवाए। कथा में गाय गंगा गीत का वर्णन करते हुये कथा व्यास गोपाल कृष्ण महाराज ने कहा कि नरसी जी महाराज के जीवन में भक्ति दृढ़ थी और भगवान श्री द्वारकाधीश् ने नरसी जी महाराज के खजाने में करोड़ रूपये रखवा दिए फिर भी नरसी जी महाराज सुख वैभव छोड पुन: संत बन गए। सह जजमान सुनील सखवाल, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू श्रृंगी, शशिकला श्रृंगी, पंचायत अध्यक्ष रमाकांत श्रृंगी, श्रृंगेश्वर समिति अध्यक्ष रामकरण, श्रृंग जिलाध्यक्ष सत्यप्रकाश श्रृंगी, महिला जिलाध्यक्ष साधना श्रृंगी, कीर्ति सुखवाल संयोगिता, मीनाक्षी, प्रीती, कृष्णा सहित सैकड़ों महिलांए व समाजबंधु मौजूद रहे।

'कौशल सम्बंधी कार्यों में सहभागिता से छात्रों में होती है कार्यदक्षता में वृद्धि'

बून्दी। राजकीय महाविद्यालय, बूंदी में छह दिवसीय कौशल उन्नयन समर कैंप का समापन समारोह प्राचार्य डॉ अनीता यादव की अध्यक्षता में आयेजित किया गया। इस मौके पर अपने संबोधन में डॉ अनीता यादव ने विद्यार्थियों को महाविद्यालय द्वारा समय-समय पर आयोजित किए गए इस प्रकार के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आव्हान करते हुए कहा कि कौशल उन्नयन गतिविधियों में सहभागिता करने से विद्यार्थियों की कार्य दक्षता में वृद्धि होती है। कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ संकाय सदस्य डॉ ओ पी शर्मा, डॉ पी सी उपाध्याय, नेचर क्लब प्रभारी डॉ रोहिणी महेश्वरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बुन्दी में कौशल उन्नयन समर कैंप का समापन हुआ।

समारोह का संचालन करते हुए कौशल विकास एवं नवाचार प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ दिलीप राठौड़ ने बताया किइस छह दिवसीय कौशल उन्नयन समर कैंप में विद्यार्थियों हेतु योग एवं फिटनेस, सॉफ्ट स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल, बायोडाटा राइटिंग, इंटरव्यू स्किल्स तथा विविध आईसीटी स्किल्स जिनमें बेसिक कंप्यूटर, डिजिटल कम्युनिकेशन, एआइ तथा उसके प्रयोग जैसे विषयों पर महाविद्यालय के विद्यार्थियों को छह दिवस तक गहन प्रशिक्षण दिया गया। अंतिम दिवस महाराष्ट्र की यशस्वी भावे संस्था से डॉ कमलेश कुरनकर द्वारा एआई तथा उसके उपयोग जैसे महत्वपूर्ण विषय को विद्यार्थियों को समझाया गया।

डॉ दिलीप राठौड़ ने बताया कि राइजिंग राजस्थान कार्यक्रम के तहत बडौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, बूंदी के साथ महाविद्यालय द्वारा किए गए एमओयू के अंतर्गत 17 मई 2025 से कंप्यूटर अकाउंटिंग एंड टैली का प्रशिक्षण भी प्रारंभ किया गया है जिसमें महाविद्यालय के 30 विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। इस छह दिवसीय समर कैंप में महाविद्यालय के नवाचार एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ के सदस्यों डॉ भारतेंदु गौतम, डॉ संजय भल्ला डॉ मेघा गुप्ता का सराहनीय योगदान रहा। कंप्यूटर ऑपरेटर अब्दुल वहाब ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। समापन समारोह में अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इसी अवसर पर नेचर क्लब एवं नवाचार प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर पूर्व में आयोजित ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता की विजेताओं को शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

भीषण गर्मी जारी, आमजन बरतें एहतियात

श्रीगंगानगर। जिले में अत्यधिक गर्मी के चलते चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने आमजन से फिर से विशेष एहतियात बरतने की अपील की है। इन दिनों अत्यधिक गर्मी व लू-तापघात होने से आमजन चपेट में आ सकते हैं, खासकर हाईरिस्क वाले लोगों को ख्याल रखने की जरूरत है। वहीं गर्मी के मौसम में स्वास्थ्य केंद्रों पर विशेष सावधानी बरतने की विभाग ने निर्देश दिए हैं।

सीएमएचओ डॉ. अजय सिंगला ने सभी अस्पतालों में रोगियों के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था, संस्थान में रोगी के उपचार के लिए आपातकालीन किट में ओआरएस, ड्रिपसेट सहित अन्य आवश्यक दवाइयां रखने के निर्देश पूर्व में दिए हैं, उन्हें एकबार फिर से अलर्ट रहने के लिए कहा गया है। उन्होंने बताया कि शरीर में लवण व पानी अपर्याप्त होने पर विषम गर्म वातावरण में लू व तापघात से सिर का भारीपन व अत्यधिक सिरदर्द होने लगता है।

इसके अलावा अधिक प्यास लगना, शरीर में भारीपन के साथ थकावट, जी मिचलाना, सिर चकराना व शरीर का तापमान बढना, पसीना आना बंद होना, मुंह का लाल हो जाना, त्वचा का सूखा होना, अत्यधिक प्यास का लगना व बेहोशी जैसी स्थिति का होना आदि लक्षण आने लगते हैं।

चिकित्सकीय दृष्टि से लू-तापघात के लक्षण, लवण व पानी की आवश्यकता व अनुपात विकृति के कारण होती है। मस्तिष्क का एक केन्द्र जो मानव के तापमान को सामान्य बनाए रखता है, काम करना छोड़ देता है। ऐसे में रोगी को तुरंत छायादार जगह पर कपड़े ढीले कर लेटा दिया जावे। रोगी को होश मे आने की दशा मे उसे ठण्डा पेय पदार्थ, जीवन रक्षक घोल, कच्चा आम का पन्ना दें।

सीएमएचओ डॉ. सिंगला ने बताया कि यदि उक्त सावधानी के बाद भी मरीज ठीक नहीं होता है, तो उसे तत्काल निकट की चिकित्सा संस्थान ले जाया जाए। स्वास्थ्य संबंधी जरूरत होने पर तत्काल 108 को कॉल करें या नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर लेकर जाएं। नरेगा अथवा अन्य श्रमिकों के कार्यस्थल पर छाया एवं पानी का पूर्ण प्रबन्ध रखा जावे ताकि श्रमिक थोड़ी-थोड़ी देर में छायादार स्थानों पर विश्राम कर सकें।

सीओआईईसी विनोद बिश्रोई ने बताया कि जहां तक सम्भव हो धूप में न निकलें, धूप में शरीर पूर्ण तरह से ढका हो। धूप में बाहर जाते समय हमेशा सफेद या हल्के रंग के ढीले व सूती कपड़ों का उपयोग करें।

बहुत अधिक भीड़ व गर्म घुटन भरे कमरों से बचें। बिना भोजन किए बाहर न निकलें। गर्दन के पिछले भाग कान एवं सिर को गमछे या तौलिये से ढक कर ही जरूरी होने पर बाहर निकलें।

रंगीन चश्में एवं छतरी का प्रयोग करें। गर्मी मे हमेशा पानी अधिक मात्रा मे पिएं एवं पेय पदाथी जैसे निंबू पानी, नारियल पानी, ज्यूस आदि का प्रयोग करें। लू तापघात से प्राय हाईरिस्क श्रेणी वाले लोग जैसे कि कुपोषित बच्चे, वृद्धजन, गर्भवती महिलाएं व शुगर, बीपी आदि के मरीज शीघ्र प्रभावित होते हैं।

बिरला 18 से बूंदी जिले के प्रवास पर

बूंदी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला 18 मई को बूंदी व लाखेरी में आयोजित कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे। निर्धारित कार्यक्रमानुसार श्री बिरला 18 मई को प्रात: 11 बजे बूंदी के सांवरिया मैरिज गार्डन में आयोजित स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके बाद अपरान्ह 3 बजे लाखेरी में आयोजित स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होंगे।। बिरला 19 मई को शाम 7 बजे हिंडोली तहसील के त्रिशूल्या गांव में भीमपुरिया बालाजी महाराज मंदिर में स्थानीय कार्यक्रम में भाग लेंगे। लोकसभा अध्यक्ष 20 मई को दोपहर एक बजे बूंदी के हरियाली रिसोर्ट में आयोजित आशा कार्यकर्ताओं के सेमिनार में शामिल होंगे।

राशिफल रविवार 18 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र सायं 6:53 तक, शुभ योग प्रात: 6:42 तक, तैतिल करण प्रात: 5:58 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सायं 6:53 तक है। रवियोग सायं 6:53 से आरम्भ होगा। आज पंचमी तिथि में वृद्धि हुई है। आज राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में सायं 7:34 पर प्रवेश करेगा। बुध आज पूर्व में रात्रि 12:35 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:22 से 9:02 तक, लाभ अमृत 9:02 से 12:23 तक, शुभ 2:03 से 3:44 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:04

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज आवश्यक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। पारिवारिक यात्रा संभव है।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।

वृष
आज नवीन कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आज महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नही